اليوم الآخر - الهندية

आख़िरत का दिन

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالزلفي

232

هاتف: ٤٢٢٤٤٦٦ ٠١٦ ـ فاكس: ٤٢٢٤٤٧٧ ٠١٦

تعاوني الزلفي

اليوم الآخر – اللغة الهندية

आख़िरत का दिन

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد
وتوعية الجاليات بالزلفي

اليوم الآخر – اللغة الهندية

إعداد وترجمة : المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالزلفي

الطبعة الأولى : ٦ / ١٤٣٩

ح المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالزلفي ، ١٤٣٩ هـ

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالزلفي

اليوم الآخر – الهندية. / المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالزلفي . - الزلفي ، ١٤٣٩ هـ

٣٢ ص ؛.. سم

ردمك: ٨-٠٠-٨٢٤٣-٦٠٣-٩٧٨

١- القيامة ٢- الجنة والنار أ.العنوان

ديوي ٢٤٣   ٥٥٤٥ / ١٤٣٩

رقم الإيداع: ٥٥٤٥ / ١٤٣٩

ردمك: ٨-٠٠-٨٢٤٣-٦٠٣-٩٧٨

आख़िरत का दिन

ईमान के 6 अरकान में से एक आख़िरत के दिन पर ईमान लाना है। कोई इंसान उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि वह आख़िरत (परलोक) और उससे संबंधित चीज़ों और वहां पेश आने वाले मामलों पर ईमान न ले आए।

आख़िरत के दिन के बारे में जानकारी हासिल करना और उसको कसरत से याद करना बहुत ही अहम है। क्योंकि मानवीय स्वभाव में सुधार, तक़्वा और दीन पर जमे रहने के लिए इसकी महत्वपूर्ण भुमिका है। दिल तभी कठोर होता है और गुनाहों की हिम्मत करता है जबकि हम उस दिन को भूल बैठते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ الوِلْدَانَ شِيبًا﴾ [المزمل:١٧]

यानी, "तुम यदि काफिर रहे, तो उस दिन कैसे पनाह पाओगे जिस दिन बच्चों को बूढ़ा कर देगा। (सूरह मुज़म्मिल, आयत 17) और फ़रमाया:

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّا أَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكَارَى وَمَا هُمْ بِسُكَارَى وَلَكِنَّ عَذَابَ اللهِ شَدِيدٌ﴾ [الحج:١:٢]

"लोगो, अपने पालनहार से डरो! निस्संदेह कियामत का ज़लज़ला बहुत ही बड़ी चीज़ है। जिस दिन तुम उसे देख लोगे कि हर दूध पिलाने वाली दूध पीते बच्चे को भूल जायेगी और सभी गर्भवती महिलाओं के गर्भ गिर जायेंगे। और तू देखेगा कि लोग मदहोश दिखायी देंगे, यद्यपि वास्तव में वे मतवाले नहीं होंगे। लेकिन अल्लाह का अज़ाब बड़ा ही सख़्त है।

मौत

इस दूनिया में हर ज़िन्दा चीज़ एक दिन समाप्त हो जाती है। इसी समाप्ति का नाम मौत है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ [آل عمران:١٨٥]

यानी, "हर नफ़्स को मौत का मज़ा चखना है। (सूरह आले इमरान आयत 185)

अल्लाह तआला ने और फ़रमाया: كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ [الرَّحمن:٢٦

यानी, "ज़मीन पर जो हैं सब फ़ना होने वाली हैं। (सूरह अलरहमान आयत 26)

अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्बोधित करते हुए कहा: اِنَّكَ مَيِّتٌ وَاِنَّهُمْ مَيِّتُونَ [الزُّمر:٣٠]

यानी, "यक़ीनन आपको भी मौत आयेगी और यह सब भी मरने वाले हैं। इस दुनिया में कोई भी हमेशा के लिए ज़िन्दा नहीं रहेगा। (सूरह अल–ज़ुम्र आयत–30 31)

अल्लाह तआला ने इसी सच्चाई को बयान करते हुए कहा:

وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ أَفَإِنْ مِتَّ فَهُمُ الْخَالِدُونَ [الأنبياء:٣٤]

यानी, "आप से पहले किसी इंसान को भी हमने हमेशगी नहीं दी। (सूरह अल अंबिया आयत 34)

1. अधिकांष लोग मौत से ग़फ़लत बरतते हैं, हालांकि मौत एक अकाट्य सत्य है जिस में किसी सन्देह की गुंजाइश नहीं है। मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि वह अधिक से अधिक मौत को याद करे। और समय बीतने से पहले अपनी इस दुनिया में नेकी के ज़रिया अपनी आख़िरत (परलोक) का सामान तैयार कर ले।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है: اغْتَنِمْ خَمْسًا قَبْلَ خَمْسٍ: حَيَاتَكَ قَبْلَ مَوْتِكَ ، وَفَرَاغَكَ قَبْلَ شَغْلِكَ ، وَغِنَاكَ قَبْلَ فَقْرِكَ ، وَشَبَابَكَ قَبْلَ هَرَمِكَ ، وَصِحَّتَكَ قَبْلَ سَقَمِكَ

पांच चीज़ों को पांच चीज़ों से पहले ग़नीमत जानो। अपनी ज़िन्दगी को मौत से पहले, अपनी सेहत को बीमारी से पहले, फ़ुर्सत को व्यस्तता से पहले, जवानी को बुढ़ापे से पहले और सम्पन्नता को तंगहाली से पहले। (इसे इमाम अहमद ने रिवायत किया है।)

मुर्दा अपने साथ क़ब्र में दुनिया का साज़ो सामान नहीं ले जाता है। बल्कि उसके साथ उसका अमल रहता है। अत: आदमी को चाहिए कि वह ज़्यादा से ज़्यादा नेक अमल

करे ताकि हमेशा की सआदत हासिल कर सके और उसके कारण अज़ाब से छुटकारा पा सके।

2. मौत कब आयेगी इसका पता नहीं चलता। इसका पता अल्लाह के सिवा किसी को भी नहीं होता। कोई आदमी न तो यह जानता है कि उसकी मृत्यु कब होगी, क्योंकि ये ग़ैबी चीज़ें है जिसे केवल अल्लाह ही जानता है।

3. जब मौत आएगी तो उसे दूर करना, समय को टाल देना, या मौत से भाग जाना संभव नहीं है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है: यानी,

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴾ [الأعراف:٣٤]

और हरेक गिरोह के लिए एक अवधि सुनिष्चित है, सो जिस समय उनकी अवधि पूरी हो जायेगी, उस समय एक घड़ी न पीछे हट सकेगी और न आगे बढ़ सकेगी। (सूरह अल आराफ़ आयत 34)

4 मोमिन को जब मौत आती है तो उसके पास मलकुल मौत अच्छी शक्ल व सूरत और अच्छी सुगन्ध के साथ आते हैं और मलकुल मौत यानी मौत के फ़रिषते के साथ रहमत के फरिषते भी आते हैं जो उसे जन्नत की शुभसूचना सुनाते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ [فصلت:٣٠]

यानी, "वास्तव में जिन लोगों ने कहा कि हमारा पालनहार अल्लाह है और फिर उसी पर जमे रहे उनके पास फ़रिषते यह कहते हुए आते हैं कि तुम कुछ भी आशंका और ग़म न करो बल्कि उस जन्नत की शुभसूचना सुन लो जिसका तुमसे वादा किया गया है। (सूरह फुस्सिलत आयत 30)

अलबत्ता काफिर इंसान के पास मौत का फ़रिष्ता डरावनी शक्ल, काली कलौटी सूरत और विभत्सय रूप में आता है और उसके साथ अज़ाब के फ़रिषते भी आते हैं और अज़ाब की सूचना देते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَلَوْ تَرَى إِذِ الظَّالِمُونَ فِي غَمَرَاتِ الْمَوْتِ وَالْمَلَائِكَةُ بَاسِطُو أَيْدِيهِمْ أَخْرِجُوا أَنْفُسَكُمُ الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُولُونَ عَلَى اللهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ آيَاتِهِ تَسْتَكْبِرُونَ﴾ [الأنعام:٩٣]

यानी, "और यदि आप उस समय देखें जबकि ये ज़ालिम लोग मौत की सख़्तियों में होंगे और फ़रिषते अपने हाथ बढ़ा रहे होगें कि हां, अपनी जानें निकालो। आज तुमको ज़िल्लत की सज़ा दी जायेगी। इस वजह से कि तुम अल्लाह तआला के जिम्मे झूठी बातें लगाते थे और तुम अल्लाह तआला की आयतों से तकब्बुर (घमंड) करते थे। (सुरह अनआम 93)

जब मौत आती है तो सच्चाई ज़ाहिर हो जाती है। और हर इंसान का मामला खुल जाता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

﴿حَتَّى إِذَا جَاءَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُونِ لَعَلِّي أَعْمَلُ صَالِحًا فِيمَا تَرَكْتُ كَلَّا إِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَائِلُهَا وَمِنْ وَرَائِهِمْ بَرْزَخٌ إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ﴾ [المؤمنون:١٠٠]

यानी, "यहां तक कि जब उनमें से किसी को मौत आ जाती है तो कहता है, ऐ मेरे पालनहार! मुझे वापस लौटा दे कि अपनी छोड़ी हुई दुनिया में जाकर नेक आमाल कर लूं, कदापि ऐसा नहीं होगा। यह तो केवल एक कथन है जिसका यह क़ायल है। उनके पीठ पीछे तो एक पर्दा है, उनके दोबारा जी उठने के दिन तक। (सूरह अल मोमिनून आयत 99–100)

जब मौत आती है तो काफ़िर और गुनहगार इंसान दुनियावी ज़िन्दगी में वापस जाना चाहता है ताकि वह नेक काम कर सके, लेकिन समय निकल जाने के बाद निदामत किसी काम की न होगी। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

﴿وَتَرَى الظَّالِمِينَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ يَقُولُونَ هَلْ إِلَى مَرَدٍّ مِنْ سَبِيلٍ﴾ [الشُّورى:٤٤]

यानी, "ज़ालिम लोग अज़ाब को देखकर कह रहे होंगे कि क्या वापस जाने की कोई राह है। (सूरह अल शूरा आयत 44)

5अल्लाह तआला का अपने बन्दों पर बड़ा रहम व करम है कि मौत से पहले जिस इंसान की अंतिम बोली, "ला इलाहा इल्लल्लाह होगी तो वह जन्नत में दाखिल होगा। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है:

مَنْ كَانَ آخِرُ كَلَامِهِ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ دَخَلَ الْجَنَّةَ

दुनिया में जिस इंसान का आखिरी कलाम "ला इलाहा इल्लल्लाह होगा वह जन्नत में दाखिल होगा। (इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।)

इसका कारण यह है कि इस कठिन समय में एक इंसान इख़्लास से ही इस कलिमा को कहेगा। अलबत्ता जो मुख्लिस नहीं होगा, वह मौत की परेशानियों की शिद्दत की वजह से भूल जायेगा। इसी लिए मृत हालत में पड़े व्यक्ति के पास मौजूद लोगों के लिए सुन्नत है कि वह उसे ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ने को प्रेरित करे। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है: لَقِّنُوا مَوْتَاكُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ

अपने मुर्दों को "लाइलाह इल्लल्लाह दोहराने की तलक़ीन किया करो। (सही मुस्लिम 916)

अलबत्ता इसका आग्रह न करें, ताकि वह उकता कर कोई अनुचित बात जुबान से अदा न कर दे।

क़ब्र

अनस रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

العَبْدُ إِذَا وُضِعَ فِي قَبْرِهِ، وَتُوُلِّيَ وَذَهَبَ أَصْحَابُهُ حَتَّى إِنَّهُ لَيَسْمَعُ قَرْعَ نِعَالِهِمْ، أَتَاهُ مَلَكَانِ، فَأَقْعَدَاهُ، فَيَقُولاَنِ لَهُ: مَا كُنْتَ تَقُولُ فِي هَذَا الرَّجُلِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ فَيَقُولُ: أَشْهَدُ أَنَّهُ عَبْدُ اللهِ وَرَسُولُهُ، فَيُقَالُ: انْظُرْ إِلَى مَقْعَدِكَ مِنَ النَّارِ أَبْدَلَكَ اللهُ بِهِ مَقْعَدًا مِنَ الجَنَّةِ، قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " فَيَرَاهُمَا

جَمِيعًا، وَأَمَّا الكَافِرُ - أَوِ المُنَافِقُ - فَيَقُولُ: لاَ أَدْرِي، كُنْتُ أَقُولُ مَا يَقُولُ النَّاسُ، فَيُقَالُ: لاَ دَرَيْتَ وَلاَ تَلَيْتَ، ثُمَّ يُضْرَبُ بِمِطْرَقَةٍ مِنْ حَدِيدٍ ضَرْبَةً بَيْنَ أُذُنَيْهِ، فَيَصِيحُ صَيْحَةً يَسْمَعُهَا مَنْ يَلِيهِ إِلَّا الثَّقَلَيْنِ

मैयत को जब क़ब्र में रखा जाता है और उसके साथी वापस होते हैं तो वह उनकी जूतियों की आवाज़ सुनता है

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आगे फ़रमायाः फिर उसके बाद दो फ़रिषते आते हैं और उसे बिठाते हैं और उससे कहते हैं तुम उस आदमी के बारे में क्या कहते थे?

यदि वह व्यक्ति मोमिन होगा तो कहेगाः मैं गवाही देता हूं कि वह अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं। फिर उससे कहा जाता है कि जहन्नम में अपनी जगह देख लो, जिसे अल्लाह ने जन्नत की जगह से बदल दिया है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आगे फ़रमायाः "वह व्यक्ति दोनों जगहों को देखेगा।

यदि मरने वाला व्यक्ति काफ़िर या मुनाफ़िक़ हो तो इस सवाल के जवाब में कहेगाः मुझे नहीं मालूम, मैं लोगों से सुनता था कि वह कुछ कहा करते थे, वही मैं भी कहा करता था। तो उससे कहा जाता है कि न तो तुम्हें मालूम हुआ और न ही तुमने उसे जानने की कोशिश की। उसके बाद उस व्यक्ति के कानों के बीच लोहे की हथौड़ी से मारा जाता है, जिसकी वजह से वह इतनी ज़ोर से चीखता है कि इंसान और जिन्नात के सिवा उसके पास मौजूद

सारी मख़लूक़ात इस चीख़ को सुनती हैं। (सही बुख़ारी 1338, सही मुस्लिम 2870)

क़ब्र में रूह का शरीर में वापस आना आख़िरत के मामलों में से एक है जिसका सांसारिक जीवन में इंसानी अक़्ल व शुऊर अंदाज़ा नहीं लगा सकती। तमाम मुसलमान इस बात पर सहमत हैं कि यदि इंसान मोमिन हो और नेमतों का मुस्तहिक़ हो तो उसको क़ब्र ही में नेमतों से नवाज़ा जाता है और यदि अज़ाब का अधिकारी है तो कब्र में ही अज़ाब से दो–चार हो जाता है। यदि अल्लाह तआला ने उसे माफ़ किया है। अतएव अल्लाह तआला ने फ़रमाया हैः

النَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا آلَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ﴾ [غافر:٤٦]

यानी, "आग है जिसके सामने यह हर सुबह व शाम लाये जाते हैं और जिस दिन क़ियामत क़ायम होगी, फ़रमान होगा कि फिरऔनियों को सख़्ततरीन अज़ाब में डालो। (सूरह अल ग़ाफिर आयत 46)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया हैः "तुम लोग क़ब्र के अज़ाब से अल्लाह की पनाह मांगो। सही अक़्ल इन चीज़ों का इन्कार नहीं कर सकती है क्योंकि इंसान दुनियावी जिन्दगी में इससे क़रीबतर चीज़ों का तजरबा करता है। जैसा कि सोने वाला इंसान महसूस करता है कि उसे सख़्त अज़ाब दिया जा रहा है। वह चिल्लाता है, चीख़ता है, और मदद चाहता है। जबकि उसके बगल में दुसरा इंसान इस तरह की

किसी भी चीज़ों को महसूस नहीं कर रहा होता है। जबकि मौत और ज़िन्दगी में बहुत बड़ा अन्तर है। क़ब्र में अज़ाब शरीर और आत्मा दोनों को होता है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः "क़ब्र आख़िरत की मन्ज़िलों में से पहली मन्ज़िल है। यदि इंसान इसमें निजात पा जाए तो उसके बाद की मन्ज़िलें आसान हो जायेंगी। लेकिन यदि इंसान इसमें निजात नहीं पा सकेगा तो बाद की मन्ज़िलें उससे सख़्त होंगी

यही कारण है कि एक मुसलमान को क़ब्र के अज़ाब से कसरत से पनाह मांगने की शिक्षा दी गयी है। विशेष कर नमाज़ में सलाम फेरने से पहले। और बुराइयों से दूर रहे जो क़ब्र और जहन्नम में अज़ाब से दो.चार होने का पहला कारण है। इस अज़ाब को अज़ाबे क़ब्र कहा जाता है, इस वजह से कि अक्सर लोगों को क़ब्र में दफ़्न कर दिया जाता है, अन्यथा डूब कर या जल कर मरने वाले को, या उस व्यक्ति को जिसे दरिंदों ने खा लिया हो, उनको भी बरज़ख़ में अज़ाब दिया जाता है।

अज़ाबे क़ब्र में लोहे के हथौड़े से मारा जाता है और उसके सिवा दूसरी तरह से भी अज़ाब दिया जाता है। मिसाल के तौर पर क़ब्र को तारीकी से भर दिया जाता है। या जहन्नम को आग का बिछौना कर दिया जाता है और उसके लिए जहन्नम का दरवाज़ा खोल दिया जाता है। और उसके अमल को बदसूरत, बदबूदार इंसान की शक्ल व सूरत दे दी जाती है जो उसके साथ क़ब्र में बैठता है। यदि इंसान काफ़िर या मुनाफ़िक़ हो तो वह इस अज़ाब में

बराबर मुबतला रहेगा। लेकिन यदि इंसान मोमिन हो जिससे गुनाह सरज़द हुए हों, तो उसके गुनाह के अनुसार उसका अज़ाब अलग–अलग होगा। और उसका अज़ाब समाप्त भी हो जाता है।

जहां तक मामला मोमिन का है तो क़ब्र में उसे नेमतों से नवाज़ा जाता है, उसके क़ब्र को कुशादा कर दिया जाता है, क़ब्र को नूर से भर दिया जाता है और उसके लिए जन्नत का एक दरवाज़ा खोल दिया जाता है। जिससे जन्नत की खुशबू और सुगंध आती है और उसके लिए जन्नत का बिछौना कर दिया जाता है और उसके अमल को एक खूबसूरत इंसान की सूरत दे दी जाती है, जिससे वह क़ब्र में उनसियत हासिल करता है।

क़ियामत और उसकी निशानियां

1. अल्लाह ने इस सृष्टि को हमेशा बाक़ी रहने के लिए पैदा नहीं किया है, बल्कि एक दिन ऐसा आएगा जबकि यह सृष्टि (कायनात) समाप्त हो जायेगी। यही वह दिन होगा जिसमें क़ियामत बरपा होगी। क़ियामत का बरपा होना एक ऐसी सच्चाई है जिसमें संदेह की कोई गुंजाइश नहीं है। अल्लाह तआला कुरआन में फ़रमाता है:

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ قُلْ بَلَى وَرَبِّي لَتَأْتِيَنَّكُمْ عَالِمِ الْغَيْبِ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغَرُ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرُ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ﴾ [سبأ:٣]

कुफ़्फार कहते हैं कि हम पर क़ियामत नहीं आयेगी, आप कह दीजिए कि मुझे मेरे रब की क़सम! वह यक़ीनन तुम पर आयेगी। (सूरह सबा आयत 3)

क़ियामत क़रीब है, क्योंकि अल्लाह तआला क़ुरआन में फ़रमाता है:

اقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ مُعْرِضُونَ﴾ [الأنبياء:١]

यानी, "लोगों के हिसाब का समय क़रीब आ गया, फिर भी वह बेख़बरी में मुंह फेरे हुए हैं। (सूरह अल अंबिया आयत 1)

क़ियामत का क़रीब आना इंसानों के अनुमान के एतिबार से नहीं है बल्कि वह अल्लाह के ज्ञान और दुनिया की आयु के हिसाब से है।

क़ियामत का ज्ञान गै़बी मामलों में से है। अल्लाह तआला ने अपने लिए ख़ास रखा है और अपनी मख़लूक़ों में से किसी को इससे अवगत नहीं कराया। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

يَسْأَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللهِ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُونُ قَرِيبًا﴾ [الأحزاب:٦٣]

यानी, "लोग आप से क़ियामत के बारे में सवाल करते हैं। आप कह दीजिए कि उसका ज्ञान तो अल्लाह ही को है। आप को क्या ख़बर बहुत मुम्किन है कि क़ियामत बिल्कुल ही क़रीब हो। (सूरह अल अहज़ाब आयत 63)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ निशानियां बतायी हैं जो क़ियामत के क़रीब होने का संकेत हैं। उनमें से एक मसीह दज्जाल का ज़ाहिर होना है जो कि लोगों के लिए बहुत बड़ा फ़ित्ना होगा। अल्लाह तआला उसे बहुत से ऐसे कामों को करने का सामर्थ्य प्रदान करेगा जो प्राकृतिक नियमों के खिलाफ़ होंगे। जिससे लोग धोखे में पड़ जायेंगे। वह आसमान को आदेश देगा कि बारिश कर और वर्षा होने लगेगी। घास को आदेश देगा तो वह निकल आयेगी। मुर्दा को ज़िन्दा करेगा और उसके अलावा बहुत से अस्वभाविक काम करेगा।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बताया है कि वह काना है और वह जन्नत और जहन्नम जैसी चीज़ लेकर आयेगा। वह जिसे जन्नत कहेगा वह जहन्नम होगी और जिसे जहन्नम कहेगा वह जन्नत होगी। वह चालीस दिन ज़मीन पर रहेगा, एक दिन एक साल के बराबर होगा। एक दिन एक महीने के बराबर होगा और एक दिन एक सप्ताह के बराबर होगा और शेष दिन आम दिनों जैसे होंगे और वह मक्का व मदीना छोड़कर दुनिया के तमाम हिस्सों में जायेगा।

क़ियामत की निशानियों में से ईसा अलैहिस्सलाम का अवतरित होना भी है। आप दिमश्क़ के पूरब में सफेद मिनारे पर सुबह के समय उतरेंगे जहां लोगों के साथ नमाज़ अदा करेंगे और फिर दज्जाल का पीछा करेंगे और उसे पकड़ कर मार डालेंगे। क़ियामत की निशानियों में एक निशानी सूरज का पश्चिम की तरफ से निकलना है। जब लोग इसे देखेंगे तो डर जायेंगे और ईमान कुबूल कर

लेंगे। यद्यपि उस समय ईमान कुबूल करना लाभदायक सिद्ध नहीं होगा। इसके अलावा क़ियामत की दूसरी निशानियां भी हैं।

क़ियामत बुरे लोगों पर बरपा होगी। उसकी कैफ़ियत यह होगी कि अल्लाह तआला क़ियामत से पहले पाकीज़ा हवा भेजेगा जो मोमिनों की रूहों को क़ब्ज़ कर लेगी। जब अल्लाह तआला मख़लूक़ात को मौत से दो चार और दुनिया को समाप्त करना चाहेगा तो फ़रिषतों को सूर (बड़ा शेंपू) फूंकने का आदेश देगा जिसे सूनकर लोग बेहोश हो जायेंगे। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता है:

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ اللهُ [الزُّمر:٦٨]

यानी, "और सूर फूंक दिया जायेगा। पस आसमानों और ज़मीन वाले सब बेहोश होकर गिर पड़ेंगे मगर जिसे अल्लाह चाहे। (सूरह अल जुमर आयत 68)

जिस दिन क़ियामत बरपा होगी वह जुमा का दिन होगा। उसके बाद सभी फ़रिषतों को मौत आ जायेगी और केवल अल्लाह की ज़ात बाक़ी रह जायेगी।

पीठ के नीचे की हड्डी के सिवा पूरा मानवीय अस्तित्व समाप्त हो जायेगा और उसे मिट्टी खा जायेगी। अलबत्ता नबियों के शरीर को मिट्टी नहीं खाती है। फिर अल्लाह तआला आसमान से पानी बरसायेगा, जिस से इंसान के शरीर दोबारा उग आयेंगे। जब अल्लाह लोगों को दोबारा जिन्दा करना चाहेगा तो सूर फूंकने के ज़िम्मेदार फ़रिषते इसराफ़ील अलैहिस्सलाम को पहले ज़िन्दा करेगा। अतएव

वे दूसरी बार सूर फुकेंगे तो अल्लाह तआला तमाम मख़लूक़ को ज़िन्दा कर देगा और लोग अपनी क़ब्रों से उसी तरह नंगे पांव नंगे शरीर और नंगे मादरज़ाद अवस्था में निकलेंगे जिस तरह से अल्लाह तआला ने उन्हें पहली बार पैदा किया था। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता है:

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُمْ مِنَ الأَجْدَاثِ إِلَى رَبِّهِمْ يَنْسِلُونَ ﴾ [يس:٥١]

यानी, "और सूर फूंका जायेगा तो लोग अपनी क़ब्रों से निकल कर अपने रब की बारगाह की तरफ़ दौड़ पड़ेंगे। (सूरह यासीन आयत 51)

एक दूसरी जगह अल्लाह तआला फ़रमाता है:

يَوْمَ يَخْرُجُونَ مِنَ الأَجْدَاثِ سِرَاعًا كَأَنَّهُمْ إِلَى نُصُبٍ يُوفِضُونَ (٤٣) خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ذَلِكَ الْيَوْمُ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ (٤٤ المعارج)

यानी, "जिस दिन ये क़ब्रों से दौड़ते हुए निकलेंगे, मानो कि वह किसी जगह की ओर दौड़.दौड़ कर जा रहे हैं। उनकी आंखें झुकी हुई होंगी। उनपर ज़िल्लत छा रही होगी। यह है वह दिन जिसका उनसे वादा किया जाता था। (सूरह अल मआरिज आयत 43–44)

उस दिन सबसे पहले क़ब्र से नबी अकरम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम निकलेंगे। उसके बाद लोगों को मैदाने महशर जो बहूत ही लंबा चौड़ा मैदान होगा, ले जाया जायेगा। काफ़िरों को औंधे मुंह जमा किया जायेगा।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया: ''काफ़िर को उसके चेहरे के बल किस तरह से जमा किया जायेगा? आपने फ़रमाया:

أَلَيْسَ الَّذِي أَمْشَاهُ عَلَى الرِّجْلَيْنِ فِي الدُّنْيَا قَادِرًا عَلَى أَنْ يُمْشِيَهُ عَلَى وَجْهِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

जिस ज़ात ने दुनिया में उसे पैरों पर चलाया क्या वह इस बात का सामर्थ्य नहीं रखता कि वह क़ियामत के दिन चेहरे के बल चलाए। (सही मुस्लिम 2806)

अल्लाह के ज़िक्र कुरआन पाक से बचने वालों को नाबीना अंधा बनाकर मैदान महशर में इकट्ठा किया जायेगा। सूरज उनके नज़दीक आ जायेगा। लोग अपने आमाल के अनुपात में पसीने में शराबोर होंगे। किसी के टखनों तक पसीना होगा, किसी की कमर तक पसीना होगा। किसी के मुंह तक पसीना होगा और ऐसा उनके आमाल के हिसाब से होगा।

वहां कुछ लोग ऐसे होंगे जिन्हें अल्लाह तआला अपने साये तले जगह देगा जिसके साये के सिवा कोई दूसरा साया नहीं होगा। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

سَبْعَةٌ يُظِلُّهُمُ اللهُ فِي ظِلِّهِ، يَوْمَ لاَ ظِلَّ إِلَّا ظِلُّهُ: الإِمَامُ العَادِلُ، وَشَابٌّ نَشَأَ فِي عِبَادَةِ رَبِّهِ، وَرَجُلٌ قَلْبُهُ مُعَلَّقٌ فِي المَسَاجِدِ، وَرَجُلاَنِ تَحَابَّا فِي اللهِ اجْتَمَعَا عَلَيْهِ وَتَفَرَّقَا عَلَيْهِ، وَرَجُلٌ طَلَبَتْهُ امْرَأَةٌ ذَاتُ مَنْصِبٍ وَجَمَالٍ،

فَقَالَ: إِنِّي أَخَافُ اللهَ، وَرَجُلٌ تَصَدَّقَ، أَخْفَى حَتَّى لاَ تَعْلَمَ شِمَالُهُ مَا تُنْفِقُ يَمِينُهُ، وَرَجُلٌ ذَكَرَ اللهَ خَالِيًا فَفَاضَتْ عَيْنَاهُ

सात तरह के लोग ऐसे होंगे जिन्हें अल्लाह तआला अपने साया तले उस दिन जगह देगा जिस दिन उसके साये के सिवा कोई दूसरा साया नहीं होगा। न्याय प्रिय बादशाह, नवजवान जिसका लालन पालन अल्लाह की इबादत में हुआ हो, वह आदमी जिसका दिल मस्जिदों में लटका रहता है, वे लोग जो अल्लाह की राह में दोस्ती करते हैं, उसी के लिए जमा होते हैं, उसी के लिए जुदा होते हैं। ऐसा व्यक्ति जिसे किसी सून्दर महिला ने बदकारी के लिए बुलाया हो, मगर उसने कह दिया हो कि मैं अल्लाह से डरता हूं। ऐसा व्यक्ति जिसने छुपाकर सदक़ा किया हो, यहां तक कि उसके बायें हाथ को भी मालूम न हो कि उसके दाहिने हाथ ने क्या खर्च किया। और ऐसा व्यक्ति जो तनहाई में अल्लाह तआला को याद करता हो तो उसकी आँखें भर आती हों। (सही बुख़ारी 1423, सही मुस्लिम 1031)

यह केवल मर्दों के लिए ख़ास नहीं है बल्कि महिलाओं के आमाल का भी हिसाब किताब होगा। यदि उसने बेहतर कर्म किया होगा तो उसके साथ बेहतरी का मामला होगा और यदि बुरा कर्म किया होगा तो उसके साथ बुरा मामला होगा। औरत को भी मर्द की तरह ही सवाब और बदला नसीब होगा।

उस दिन, जो पचास हज़ार साल के बराबर होगा, लोगों को शिद्दत के साथ प्यास महसूस होगी। अलबत्ता यह समय मोमिन के लिए एक फर्ज़ नमाज़ पढ़ने की अवधि के समान होगा, जो जल्द ही गुज़र जायेगी।

मुसलमान नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हौज़ पर जायेंगे और उससे पानी पीयेंगे। (हौज़ एक बहुत बड़ी नेमत है जिसे अल्लाह ख़ासतौर पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अता करेगा। उसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद, शहद से ज़्यादा मीठा, उसकी खुशबू मुष्क से ज़्यादा पाकीज़ा और उसमें मौजूद बर्तन सितारों की संख्या में होंगे। इससे जो एक बार पी लेगा, वह कभी प्यासा नहीं रहेगा।)

लोग मैदाने महशर में लम्बे समय तक रहेंगे और अपने बीच फैसला किये जाने और हिसाब व किताब का इन्तिज़ार करेंगे और साथ ही धूप भी तेज़ होगी तो लोग ऐसे व्यक्ति की खोज में निकलेंगे जो मख़लूक़ात के बीच फैसले के लिए सिफ़ारिश कर सके।

सभी लोग आदम अलैव के पास पहुचेंगे, लेकिन वे असमर्थता व्यक्त कर देंगे। फिर नूह अलैहिस्सलाम के पास जायेंगे वह भी उज़्र कर लेंगे। उसके बाद इबराहीम अलैव की सेवा में पहुचेंगे, वे भी माज़रत कर लेंगे तो लोग मूसा अलैव के पास जायेंगे, लेकिन वह भी असमर्थता व्यक्त कर देंगे

फिर लोग ईसा अलैहिस्सलाम की सेवा में पहुंचेंगे, मगर वे भी असमर्थता व्यक्त कर देंगे।

अतएव अन्त में सभी लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर होंगे, तो आप कहेंगे कि मैं सिफ़ारिश करुंगा और अर्श के नीचे सजदे में गिर जायेंगे। और रब की वह तारीफ़ें बयान करेंगे जिन्हें अल्लाह इस अवसर पर आपको बतायेगा। उसके बाद आपसे कहा जायेगा,'ऐ मुहम्मद! अपना सिर उठाओ, मांगो, दिया जायेगा और सिफ़ारिश करो, तुम्हारी सिफ़ारिश कुबूल की जायेगी

फिर अल्लाह तआला लोगों के बीच फैसले और हिसाब–किताब की इजाज़त देगा और सबसे पहले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत का हिसाब किताब होगा

बन्दों के आमाल में सबसे पहले नमाज़ का हिसाब लिया जायेगा। यदि वह ठीक होगी और स्वीकार कर ली जायेगी तो अन्य कर्मों को देखा जायेगा। और यदि नमाज़ रद्द कर दी गयी तो दूसरे आमाल भी रद्द कर दिये जायेंगे।

बन्दों से पांच चीज़ों के बारे में सवाल किया जायेगा। उसकी आयु के बारे में कि उसे उसने किस चीज़ में खर्च किया, उसकी जवानी के बारे में कि उसे कहां गुज़ारा, उसके माल के बारे में कि उसे कहां से कमाया और कहां खर्च किया और इल्म (ज्ञान) के बारे में कि कितना उस पर अमल किया।

अलबत्ता मामलात में बन्दों के बीच सबसे पहले खून का फैसला किया जायेगा। उस दिन नेकियों और बुराइयों के ज़रिया क़ेसास दिया जायेगा। किसी व्यक्ति के नेकियों को लेकर उसके फ़रीक़ को दे दिया जायेगा और जब उसकी

नेकियां खत्म हो जायेंगी तो उसकी बुराइयां उस व्यक्ति के खाते में डाल दी जायेंगी।

उस दिन पुल सिरात स्थापित किया जायेगा। सिरात एक पुल होगा जो बाल से अधिक पतला और तलवार से अधिक तेज़ होगा। उसे जहन्नम के ऊपर स्थापित किया जायेगा। जिन लोगों ने अच्छा अमल (कर्म) किया होगा वे पलक झपकते उस पुल से गुज़र जायेंगे, तो कुछ हवा की तरह गुज़रेगें, कुछ अच्छे क़िस्म के घोड़े की गति में पार कर जायेंगे तो कुछ लोग घिसटते हुए पुल सिरात को पार कर जायेंगे।

पुल सिरात पर आंकस लगे होंगे जो लोगों को उचक लेंगे और उन्हें जहन्नम में डाल देंगे। काफ़िरों और मोमिनों में से जिन गुनहगार बन्दों को अल्लाह चाहेगा, वे जहन्नम में गिर जायेंगे। काफ़िर तो हमेशा–हमेशा के लिए जहन्नम में रहेंगे, जबकि वह मोमिन जिन से कुछ गुनाह हो गया होगा, उन्हें अल्लाह जितना चाहेगा, अज़ाब देगा और फिर उन्हें जहन्नम से निकाल कर जन्नत में दाख़िल कर देगा।

अल्लाह तआला रसूलों और नबियों में से जिन्हें चाहेगा, उन्हें अहले तौहीद में से जहन्नम में दाखिल हुए लोगों के हक़ में सिफ़ारिश करने की अनुमति देगा। और उनकी सिफ़ारिश से अल्लाह उन्हें जहन्नम की आग से निकालेगा।

पुल सिरात को पार करने वाले जन्नती लोग जन्नत और जहन्नम के बीच एक पुल पर रुकेंगे, जहां एक दूसरे का बदला दिलाया जायेगा। उनमें से जिसके ज़िम्मे उसके

भाई का कोई हक़ होगा तो जब तक बदला नहीं दिला दिया जायेगा और हरेक का दिल दूसरे के प्रति ठीक न हो जायेगा वह जन्नत में दाख़िल न होगा।

जब जन्नती जन्नत में और जहन्नमी जहन्नम में दाख़िल हो जायेंगे तो मौत को एक मेंढ़े की शक्ल में लाया जायेगा और उसे जन्नत व जहन्नम के बीच ज़िब्ह कर दिया जायेगा। उसको जन्नती और जहन्नमी सभी लोग देख रहे होंगे

उसके बाद कहा जायेगा कि जन्नतियो! अब हमेशा ज़िन्दा रहना है, मौत नहीं आयेगी, जहन्नमियो! अब हमेशा ज़िन्दा रहना है, मौत नहीं आयेगी। उस समय यदि खुशी से मरना संभव होता तो जन्नती मारे खुशी के मर जाते और ग़म से मरना संभव होता तो जहन्नमी ग़म से मर जाते।

जहन्नम और उसके अज़ाब

अल्लाह ने फ़रमाया हैः

فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ [البقرة:٢٤]

यानी "उस आग से बचो जिसका इंधन इंसान और पत्थर हैं जो काफ़िरों के लिए तैयार किया गया है। (सूरह अल बक़रा आयत 24)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबियों को संबोधित करते हुए कहाः

نَارُكُمْ هَذِهِ الَّتِي يُوقِدُ ابْنُ آدَمَ جُزْءٌ مِنْ سَبْعِينَ جُزْءًا، مِنْ حَرِّ جَهَنَّمَ» قَالُوا: وَاللهِ إِنْ كَانَتْ لَكَافِيَةً، يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: «فَإِنَّهَا فُضِّلَتْ عَلَيْهَا بِتِسْعَةٍ وَسِتِّينَ جُزْءًا، كُلُّهَا مِثْلُ حَرِّهَا

तुम लोग जिस आग को जलाते हो वह जहन्नम की आग का 70वां हिस्सा है। सहाबियों ने कहा: "यह आग ही अज़ाब के लिए काफ़ी थी, यह सुनकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: वह आग 69 गुना ज़्यादा है और हर गुना उसी दुनियावी आग की तरह गर्म है। (सही बुख़ारी 3265, सही मुस्लिम 2843)

जहन्नम (नरक) के सात खण्ड हैं। हर खण्ड में पहले की तुलना में ज़्यादा कठोर अज़ाब दिया जाता है। और प्रत्येक खण्ड में अपने कर्मों के अनुसार कुछ लोग होंगे। सबसे निचले खण्ड में जहां का अज़ाब सबसे ज़्यादा सख़्त होगा, मुनाफ़िक़ीन होंगे।

काफ़िरों को अज़ाब दिये जाने का सिलसिला हमेशा–हमेशा चलता रहेगा। वह कभी खत्म नहीं होगा। जब जब वे जल कर राख हो जायेंगे, तो उन्हें और अज़ाब दिये जाने के लिए पहली अवस्था में लौटा दिया जायेगा। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُودُهُمْ بَدَّلْنَاهُمْ جُلُودًا غَيْرَهَا لِيَذُوقُوا الْعَذَابَ [النساء:٥٦]

यानी, "जब उनकी खालें पक जायेंगी हम उनके सिवा और खालें बदल देंगे ताकि वे अज़ाब चखते रहें। (सूरह अल निसा आयत 56)

एक दूसरी जगह फ़रमाया गया है:

وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ لَا يُقْضَى عَلَيْهِمْ فَيَمُوتُوا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِنْ عَذَابِهَا كَذَلِكَ نَجْزِي كُلَّ كَفُورٍ ﴾ [فاطر:٣٦]

यानी, "और जो लोग काफ़िर हैं उनके लिए दोज़ख़ की आग है, न तो उनको मौत ही आयेगी कि मर ही जाएं और न दोज़ख़ का अजाब ही हलका किया जायेगा। हम हर काफ़िर को ऐसी ही सज़ा देते हैं।(सूरह अल फ़ातिर आयत 36)

जहन्नम में काफ़िरों को बेड़ियों में जकड़ दिया जायेगा और उनकी गर्दनों में तौक़ डाल दिये जायेंगे।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَتَرَى الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ مُقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ (٤٩) سَرَابِيلُهُمْ مِنْ قَطِرَانٍ وَتَغْشَى وُجُوهَهُمُ النَّارُ (٥٠ إبراهيم

यानी, "आप उस दिन गुनहगारों को देखेंगे कि ज़ंजीरों में मिले जुले एक जगह जकड़े हुए होंगे। उनके लिबास गंधक के होंगे और आग उनके चेहरों पर भी चढ़ी हुई होगी। (सूरह इबराहीम आयत 49—50)

जहन्नमी थूहड़ का फल खायेंगे। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

إِنَّ شَجَرَةَ الزَّقُّومِ (٤٣) طَعَامُ الأَثِيمِ (٤٤) كَالْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ (٤٥) كَغَلْيِ الْحَمِيمِ (٤٦) خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَى سَوَاءِ الْجَحِيمِ (٤٧) ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ (٤٨ الدُّخان

यानी, "निस्सन्देह थूहड़ का पेड़ गुनाह करने वालों का खाना है, जो तिलछट के हैं और पेट में खौलता रहता है, तेज़ गर्म पानी के समान। (सूरह अल दुख़ान आयत 46)

जहन्नुम के अज़ाब की सख़्ती और जन्नत की नेमतों का अन्दाज़ा सही मुस्लिम की उस हदीस से लगाया जा सकता है। जिस में अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है:

يُؤْتَى بِأَنْعَمِ أَهْلِ الدُّنْيَا مِنْ أَهْلِ النَّارِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، فَيُصْبَغُ فِي النَّارِ صَبْغَةً، ثُمَّ يُقَالُ: يَا ابْنَ آدَمَ هَلْ رَأَيْتَ خَيْرًا قَطُّ؟ هَلْ مَرَّ بِكَ نَعِيمٌ قَطُّ؟ فَيَقُولُ: لَا، وَاللهِ يَا رَبِّ وَيُؤْتَى بِأَشَدِّ النَّاسِ بُؤْسًا فِي الدُّنْيَا، مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ، فَيُصْبَغُ صَبْغَةً فِي الْجَنَّةِ، فَيُقَالُ لَهُ: يَا ابْنَ آدَمَ هَلْ رَأَيْتَ بُؤْسًا قَطُّ؟ هَلْ مَرَّ بِكَ شِدَّةٌ قَطُّ؟ فَيَقُولُ: لَا، وَاللهِ يَا رَبِّ مَا مَرَّ بِي بُؤْسٌ قَطُّ، وَلَا رَأَيْتُ شِدَّةً قَطُّ

क़ियामत के दिन दुनिया के सबसे ऐश व आराम में रहे जहन्नमी इंसान को लाया जायेगा और उसे जहन्नम में डुबकी लगवायी जायेगी और उससे पुछा जायेगा, ऐ आदम की औलाद! क्या तुम्हें कभी सुख–चैन नसीब हुआ? क्या

तुम्हें कभी नेमत हासिल हुई? वह कहेगा, नहीं, अल्लाह की क़सम! मेरे पालनहार, नहीं।

उसके बाद दुनिया के सबसे मुहताज जन्नती को लाया जायेगा, उसे जन्नत में कुछ देर के लिए भेजा जायेगा और उससे पुछा जायेगा, क्या तुम्हें कभी मुहताजी लाहीक़ हुई थी? क्या तुम कभी सख़्त हालात से दोचार हुए थे? वह कहेगा, नहीं, मेरे परवरदिगार, अल्लाह की क़सम! न तो मुझे कभी मुहताजी लाहीक़ हुई और न ही मुझ पर कभी सख़्त हालात आए।

काफ़िर इंसान जहन्नम की एक डुबकी ही से दुनियावी नेमतों और ऐश व आराम को भूल जायेगा और मोमिन इंसान जन्नत में एक पल बिताने के बाद दुनियावी मुसीबतों और सख़्त हालात को भूल जायेगा।

जन्नत और उसकी नेमतें

जन्नत हमेशा रहने और मान–सम्मान की जगह है। अल्लाह तआला ने उसे अपने नेक बन्दों के लिए तैयार किया है। उसमें ऐसी नेमतें हैं जिन्हें न आंखों ने देखा है, न कानों ने सुना है और न ही किसी इंसान के दिल में उनका ख़्याल ही आया है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

﴿فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ﴾ [السجدة:١٧]

यानी, "कोई नफ़्स नहीं जानता जो हमने उनकी आँखों की ठंडक उनके लिए छुपा कर रख छोड़ी है। जो कुछ करते थे, यह उसका बदला है। (सूरह अल सजदा आयत 17)

जन्नत के विभिन्न दर्जे और मरतबे हैं। उसमें मोमिनों के ठिकाने उनके आमाल के अनुसार होंगे। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

يَرْفَعِ اللهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ [المجادلة:١١]

यानी, "अल्लाह तआला तुम में से उन लोगों को जो ईमान लाये हैं, और जो इल्म दिये हैं, दर्जे बुलन्द कर देगा। (सूरह अल मुजादिला आयत 11)

जन्नती लोग जन्नत में जो चाहेंगे खायेंगे, पीएंगे, उनमें पानी की नहरें हैं जो पुरानी होने की वजह से बदबूदार नहीं होती हैं। और दूध की नहरें हैं जिनका मज़ा नहीं बदलता है। साफ़ शफ़्फ़ाफ़ शहद की नहरें होंगी और शराब की भी नहरें होंगी जिससे पीने वालों को सुरूर हासिल होगा। अलबत्ता उनकी शराब दुनियावी शराब जैसी नहीं होगी। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

يُطَافُ عَلَيْهِم بِكَأْسٍ مِن مَّعِينٍ (٤٥) بَيْضَاءَ لَذَّةٍ لِّلشَّارِبِينَ (٤٦) لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنزَفُونَ (٤٧ الصّافات

यानी, "जारी शराब के जाम का उन पर दौर चल रहा होगा, जो साफ शफ़्फ़ाफ़ और पीने में मज़ेदार होगा। न उससे सिर में दर्द होगा न उसके पीने से बहकेंगे। (सूरह अस साफ़्फ़ात आयत 45–47)

जन्नती जन्नत में हूरे ईन से शादी करेंगे। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है:

وَلَوْ أَنَّ امْرَأَةً مِنْ أَهْلِ الجَنَّةِ اطَّلَعَتْ إِلَى أَهْلِ الأَرْضِ لَأَضَاءَتْ مَا بَيْنَهُمَا، وَلَمَلَأَتْهُ رِيحًا، وَلَنَصِيفُهَا عَلَى رَأْسِهَا خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا

''यदि जन्नत की कोई महिला ज़मीन वालों की ओर झांक ले, तो आसमान और ज़मीन के बीच खाली जगहों को रौशन कर दे और उसे खुशबू से भर दे। (सही बुख़ारी 2796)

जन्नतियों के लिए सबसे बड़ी नेमत अल्लाह का दीदार होगा। जन्नतियों को पेशाब–पाखाना की ज़रूरत नहीं होगी। वे न खेखारेंगे, न थूकेंगे। उनकी कंघिया सोने की होंगी और उनका पसीना मुश्क होगा। उन्हें मिलने वाली नेमतें स्थायी होंगी, कभी समाप्त नहीं होंगी और न ही कम होंगी

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

مَنْ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ يَنْعَمُ لَا يَبْأَسُ، لَا تَبْلَى ثِيَابُهُ وَلَا يَفْنَى شَبَابُهُ

जन्नत में जो कोई दाख़िल होगा, वह ऐश करेगा, मुहताजी से दो–चार नहीं होगा, न उसके कपड़े पुराने होंगे और न उसकी जवानी खत्म होगी। (सही मुस्लिम 2836)

सबसे कमतर जन्नती, ईमान वालों में से जो सबसे बाद में जहन्नम से निकलेगा और जन्नत में दाख़िल होगा,उसके हिस्से में आने वाली नेमतें पूरी दुनिया की नेमतों से दस गुना ज़्यादा बेहतर होंगी।

والحمد لله الذی بنعمته تتم الصالحات